Table of Contents

1. [illegible]
2. [illegible]
3. [illegible]
4. [illegible]
5. [illegible]
6. [illegible]
7. [illegible]
8. [illegible]

[illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [

"□□□□□-□□□□" □□□□□ □□□ □□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□ □□□ □□□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□, □□□□ □□□, □□□□□ □□□□, □□□□ □□□ □□□□□, □□□□□ □□□ □□□ □□ □□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□ □□□

- □□□□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□ □□□
- □□□□□□, □□□□□, □□□□□□, □□□□□, □□□□ □□□
- □□□□□□□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□□□□□
- □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□□□
- □□□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□

□□□□□ □□□□□□□□□□:

- "□□□□□□-□□□□□ □□ □□, □□ □□ □□□□ □□□ □□"
- "□□□□□ □□□ □□□ □□, □□□□ □□□ □□□ □□□"
- "□□□□□ □□□□□ □□□□, □□□□ □□□□ □□□ □□"
- "□□□□ □□□ □□ □□□□, □□□□□□ □□ □□□□ □□□"

□□□□□ □□□□□□□ □□□ □□□□□□

□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□ □□ □□ □□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□□

- □□□□□□□□□□□□: □□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□, □□□□ □□□□□, □□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□□□□□
- □□□□□□□□ □□□□□□: "□□□□□ □□□ □□□ □□, □□□□ □□□ □□□ □□□" □□□ '□' □□ '□' □□ □□□□□□□□□□□□□
- □□□□□□□□□□: □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□□ □□ □□□□□, □□□□□ □□ □□□□
- □□□□ □□□□□□: "□□□□□ □□□□□ □□□□, □□□□ □□□□ □□□ □□" □□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□□ □□□

□□□□□□□□□ □□□□□ □□□ □□□□□□□

Prepzy

"वर्षा-बहार सब के, मन को लुभा रही है"
यह पंक्ति वर्षा ऋतु की ताजगी और मनमोहक दृश्य को दर्शाती है जो सभी को आकर्षित करता है।

"बिजली चमक रही है, बादल गरज रहे हैं"
यहाँ वर्षा के मौसम की गरजती बिजली और बादलों की आवाज़ का जीवंत चित्रण है।

"खिलता गुलाब कैसा, सौरभ उड़ा रहा है"
यह पंक्ति फूलों की खुशबू और उनकी सुंदरता को दर्शाती है जो वातावरण को महका रही है।

"सारे जगत की शोभा, निर्भर है इसके ऊपर"
यह पंक्ति वर्षा ऋतु के महत्व को बताती है कि सम्पूर्ण संसार की सुंदरता और जीवन वर्षा पर निर्भर है।

Prepzy

अभ्यास प्रश्न

स्तर 1 – सरल

- मुकुटधर पाण्डेय का जन्म कहाँ हुआ था?
- "वर्षा-बहार" कविता में किस ऋतु का वर्णन है?
- कविता में वर्षा के मौसम की कौन-कौन सी विशेषताएँ बताई गई हैं?

स्तर 2 – मध्यम

- कविता में प्रयुक्त किसी दो अलंकारों का उदाहरण देकर व्याख्या करें।
- वर्षा ऋतु का प्रकृति और जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है, विस्तार से लिखिए।

स्तर 3 – कठिन

- "सारे जगत की शोभा, निर्भर है इसके ऊपर" इस पंक्ति का गहन अर्थ समझाइए।

- मुकुटधर पाण्डेय की कविता "वर्षा-बहार" में प्रकृति के सौंदर्य का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर कुंजी

स्तर 1 – सरल

- मुकुटधर पाण्डेय का जन्म छत्तीसगढ़ के बिलासपुर में हुआ था।
- "वर्षा-बहार" कविता में वर्षा ऋतु का वर्णन है।
- कविता में वर्षा के मौसम की विशेषताएँ हैं: ठंडी हवा, बरसता पानी, गाते पक्षी, खिलते फूल आदि।

स्तर 2 – मध्यम

- चित्रालंकार: "बिजली चमक रही है, बादल गरज रहे हैं" - यहाँ बिजली और बादल का सुंदर चित्रण है।
- मानविकीकरण: "करते हैं नृत्य वन में, देखो ये मोर सारे" - पक्षियों को मानवीय भाव दिए गए हैं।
- वर्षा ऋतु का प्रभाव: वर्षा से प्रकृति हरी-भरी होती है, जीव-जन्तु प्रसन्न होते हैं, किसान खुशहाल होते हैं।

स्तर 3 – कठिन

- इस पंक्ति का अर्थ है कि सम्पूर्ण संसार की सुंदरता और जीवन वर्षा पर निर्भर है क्योंकि वर्षा से ही प्रकृति हरी-भरी होती है और जीवन चलता है।
- मुकुटधर पाण्डेय की कविता में वर्षा ऋतु के दृश्य, पक्षियों की गतिविधियाँ, फूलों की खुशबू और वातावरण की ताजगी का सुंदर चित्रण है जो प्रकृति के सौंदर्य को दर्शाता है।

त्वरित संदर्भ

Prepzy

- मुकुटधर पाण्डेय : छत्तीसगढ़ के प्रसिद्ध कवि, पद्मश्री सम्मानित।
- वर्षा-बहार : वर्षा ऋतु की सुंदरता और जीवन में उसकी महत्ता पर आधारित कविता।
- अलंकार : चित्रालंकार, अनुप्रास, मानविकीकरण, उपमा।
- प्राकृतिक छवियाँ : बिजली, बादल, बारिश, पक्षी, फूल।

शब्दावली

- वर्षा-बहार : वर्षा ऋतु की सुंदरता और ताजगी।
- मुकुटधर पाण्डेय : कवि का नाम।
- अलंकार : काव्य में सौंदर्य बढ़ाने वाले शब्द या वाक्य।
- मानविकीकरण: निर्जीव वस्तुओं या जीवों को मानवीय गुण देना।
- चित्रालंकार : काव्य में सुंदर चित्र प्रस्तुत करना।
- अनुप्रास अलंकार : एक ही ध्वनि या अक्षर की पुनरावृत्ति।

Prepzy